दिनांक 1/05/2020

डा० दिनेश सिंह यादव (असिस्टेंट प्रोफेसर, शा० वि०)
बी०एड० द्वितीय वर्ष - 2018-2020

पेपर - ज्ञान एवं पाठ्यक्रम

ज्ञान निर्माण के सिद्धान्त (Theories of Construction of Knowledge)

ज्ञान के निर्माण के मुख्य सिद्धान्त निम्नलिखित हैं।

(1) अनुभववादी सिद्धान्त (Theory of Empiricism)
(2) बुद्धिवाद का सिद्धान्त (Theory of Rationalism)
(3) प्रायोगिक सिद्धान्त (Experimental Theory)
(4) योग सिद्धान्त (Yogic Theory)
(5) संवेद विवेकपूर्ण सिद्धान्त (Sense Rationatisation Theory)
(6) समीक्षावाद का सिद्धान्त (Criticism Theory)

अनुभववादी सिद्धान्त (Theory of Empiricism)

अनुभववादी सिद्धान्त के अनुसार अनुभव (experience) ज्ञान की जननी है। अनुभववाद के जन्मदाता (Father of Empiricism) ब्रिटिश दार्शनिक जॉन लॉक के अनुसार- "जन्म के समय बालक का मन एक कोरी पट्टी या कागज के समान होता है (Child's mind is like a simple slate or Paper) जिस पर कुछ लिखा जा सकता है। जैसे-जैसे वह बाहरी जगत के सम्पर्क में आता है। संवेदनाओं (Sensations) के रूप में वस्तुओं के चिन्ह मस्तिष्क की इस खाली पट्टी पर अंकित होते हैं। इस प्रकार ज्ञान की सामग्री बाहर से आती है। ज्ञान जन्मजात नहीं है, परन्तु अर्जित है। सभी ज्ञान

अनुभव द्वारा प्राप्त किया जाता है। अनुभव को समूचे ज्ञान का स्रोत माना जाता है। यह हमारे मस्तिष्क या मन के बाहर से आता है। यह स्वंय मन के अन्दर, जन्म के पूर्व ही से निहित नहीं होता। मनुष्य को ज्ञान विभिन्न इन्द्रियों (Senses) के माध्यम से प्राप्त संवेदनाओं के द्वारा होता है। आधुनिक अनुभववादियों (Modern empiricists) ने बौद्धिक प्रक्रियाओं की प्राथमिकता को ज्ञान-विस्तार में अस्वीकार तो ~~किया~~ नहीं किया है परन्तु ~~वे यह कह देते हैं कि इस बौद्धिक~~ सहयोग की अन्तिम उत्पत्ति अनुभव ही है। दूसरे शब्दों में बुद्धि ज्ञान में कुछ कमी कर सकती है, किन्तु उस कमी की सम्पूर्ति केवल अनुभव द्वारा ही प्राप्त होती है। अनुभववादी जन्मजात प्रत्ययों (Innate ideas) के विरुद्ध हैं।

बुद्धिवाद का सिद्धान्त (Theory of Rationalism)

यह सिद्धान्त सुकरात और प्लेटो का दिया है। उन्होंने कहा सत ज्ञान की उत्पत्ति बुद्धि से होती है। उन्होंने यह भी कहा है कि इन्द्रिय ज्ञान असत और अस्थायी है। इस दृष्टि से उन्हे बुद्धिवाद का आदि प्रवर्तक कहा जाता है। ज्ञान मीमांसा के स्वरूप और स्रोत सम्बन्धी का दूसरा प्रमुख सिद्धान्त बुद्धिवाद सिद्धान्त है। बुद्धिवादियों के अनुसार समस्त ज्ञान बुद्धि पर आधारित है। केवल बुद्धि के द्वारा ही निश्चित, सत और ~~सा~~ सार्वभौमिक ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है।

बुद्धि ही ज्ञान का अन्तिम प्रमाण है। (Reason alone is the final testimony only through intellect) बुद्धि हमें जन्म से मिलती है और उसी से हमें समस्त ज्ञान प्राप्त करते हैं। ज्ञान प्रत्यय (ideas) के रूप में होता है। इस लिए यह कहा जा सकता है कि हमारे वे प्रत्यय जन्म से हमारे साथ हैं। अत: जन्मजात हैं। इस प्रकार के विचारकों को हम बुद्धिवादी और उनके इस बुद्धि के ज्ञान की उत्पत्ति मानने के सिद्धान्त को बुद्धिवाद कहते हैं।

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

बुद्धिवाद के अनुसार- "हमारे समस्त सत जन्मजात (Innate) एवं सार्वभौम ज्ञान (Universal Knowledge) अध्यावश्यक हैं। ये अनुभव पर आधारित नहीं, अपितु हमारा अनुभव ही उन पूर्व निहित प्रत्ययों पर निर्भर होता है।" हमारे मन के जन्मजात प्रत्यय हमें सत (Real) ज्ञान देते हैं। परन्तु जब हम उन प्रत्ययों की सीमा लाँघने लगते हैं, तब हमारा ज्ञान कल्पना आदि के रूप में होता है और वह सत एवं सार्वभौमिकता की परिधि से दूर हट जाता है। ज्ञान प्रत्यक्षीकरण या संवेदना का परिणाम नहीं, यह अनुभव पूर्व है, (Knowledge is prior to experience) इस सिद्धान्त के अनुसार बुद्धिवाद को सहज ज्ञानवाद भी कहते हैं।

प्रायोगिक सिद्धान्त (Experimental Theory)

यह सिद्धान्त ज्ञान के एन्द्रिक व लौकिक इन दोनों स्तरों से सम्बन्ध रखता है। प्रयोजनवाद जीवन का सिद्धान्त है, जो प्रयोगों पर आधारित ज्ञान के सिद्धान्त को स्वयं में समेटे हुए है। परन्तु आजकल प्रायोगिक सिद्धान्त ज्ञान प्राप्त करने की इस विधि का समर्थन करते हैं। उसके अनुसार यथार्थ ज्ञान प्राप्त करने की सर्वोत्तम विधि है प्रयोग या अनुभव। वही ज्ञान उपयोगी है जिसको हम करके, अपने अनुभव के आधार पर प्राप्त करते हैं। ज्ञान की सफलता- असफलता की जाँच प्रयोग के द्वारा की जा सकती है। इस प्रकार ज्ञान प्राप्ति प्रायोगिक विधि पर आधारित होने के कारण ही प्रयोजनवाद को प्रयोगवाद भी कहा जाता है। इस विधि के अनुसार - जैसे- जैसे व्यक्ति नए-नए अनुभव प्राप्त करता है। वैसे-वैसे उसके पूर्व अर्जित ज्ञान में निखार व सुधार आ जाता है।

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

योग सिद्धान्त
(Yogic Theory)

योग सिद्धान्त के मुख्य प्रतिपादक महर्षि पतंजलि (Patanjali) ने इस सिद्धान्त का काफी महत्व दर्शन के क्षेत्र में बताया है। इस सिद्धान्त के अन्तर्गत उन्होंने बताया है कि मस्तिष्क की एक प्रमुख विशेषता है कि यह व्यग्र है व इसके साथ-साथ इसमें अज्ञानता है जो सभी शारीरिक तथा मानसिक विचलनों की जड़ है। योग का मुख्य उद्देश्य इस मानसिक चंचलता को नियंत्रित करना है। तथा इस मस्तिष्क को एक बिन्दु पर केन्द्रित करता है और सभी बुराइयों की जड़ अज्ञानता को जड़ से खत्म करना है।

ये केवल योग की साधना के विकास से ही सम्भव है, जिसमें कुछ शारीरिक तथा मानसिक क्रियाएँ करवाई जाए। जिससे केन्द्रीयकरण की सहायता से मानसिक चेतना को उच्च स्तर तक ले जाया जा सके। जब एक योगी इस स्तर तक पहुँच जाता है, तो ज्ञान आत्मा को अनुभव करने लगता है। योग सिद्धान्त के बल पर नैतिक क्षेत्र में जो स्थाई रूप जरूरी है, नैतिकता पर चलने को अभिप्रेरित करता है।

संवेद विवेकपूर्ण सिद्धान्त (Sense Rationalisation Theory)

यह सिद्धान्त अरस्तू द्वारा प्रतिपादित किया गया है। इसमें अरस्तू ने पूर्ण अनुभववाद तथा पूर्ण तर्कवाद को स्वीकार नहीं किया। अरस्तू का मानना था कि चेतन सामग्री की क्षमता को तर्क के द्वारा वास्तविक

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

बनाया जाता है और इस प्रकार तुम्हारे पास विचारों, तथ्यों, सिद्धान्तों तथा ज्ञान प्रणाली का विस्तृत स्वरूप होता है। काण्ट के अनुसार:- अनुभववाद और बुद्धिवाद दोनो अन्धविश्वासी हैं। उसके मतानुसार हम अनुभव के साथ ज्ञान के उद्देश्य के लिए कार्य आरंभ कर सकते हैं। परन्तु अनुभव स्वयं में ज्ञान प्रदान नहीं करते। इसमें ज्ञान को रूप देने के लिए तर्क की आवश्यकता होती है।"

आजकल के आधुनिक विद्यालय मस्तिष्क तथा चेतना दोनों के प्रशिक्षण के कार्य करते हैं। शिक्षक कौशल मस्तिष्क तथा चेतना की सहायता से ज्ञान प्राप्त करने के लिए विद्यार्थियों को अभिप्रेरित करते हैं ताकि वे स्वज्ञ जीवन व्यतीत कर सकें।

समीक्षावाद का सिद्धान्त:- (Criticism Theory)

आधुनिक दर्शन का महारथी प्रसिद्ध जर्मन दार्शनिक इमैनुअल काण्ट ज्ञान के कारण की खोज के लिए बुद्धिवाद और अनुभववाद दोनों की अभ्यास हुआ। उसने पक्षपात-रहित होकर इन दोनों वादों और ज्ञान की शक्ति की परीक्षा की। इसलिए उसके निर्धारित सिद्धान्तों को परीक्षावाद का नाम दिया। इसके अनुसार दार्शनिक प्रणाली न बुद्धिवाद की प्रणाली है और न अनुभववाद की। परन्तु यह समीक्षात्मक प्रणाली है।

काण्ट के अनुसार:- "परीक्षावाद वह दर्शन है जो कुछ कहने के पहले तौलता है और कुछ जानने के पहले ज्ञान की शर्तों की जाँच करता है।"

उसका का मत है कि दर्शन का कार्य बुद्धि (Jugdment) और अनुभव (Experience)

दोनों की समीक्षा करके यह देखना है कि ज्ञान की क्रिया में इनका क्या महत्व है। अपनी समीक्षा प्रणाली के आधार पर कांट इस निष्कर्ष पर पहुँचता है कि ज्ञान की क्रिया में बुद्धि (Judgement) और अनुभव (experience) दोनों आवश्यक हैं क्योंकि अनुभव से ज्ञान का कच्चा माल (raw material) मिलता है और बुद्धि से इनका आकार (form) मिलता है।

बिना अनुभव के कोई सामग्री प्राप्त नहीं कर सकता और बिना बुद्धि के उसे कोई निश्चित रूप मिल नहीं सकता। अतः एक की भी अनुपस्थिति में ज्ञान की उत्पत्ति या विकास सम्भव नहीं। कांट का कथन है कि- बुद्धि के बिना संवेदनाएँ अंधी होती हैं और संवेदनाओं के बिना बुद्धि खोखली होती है।

Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner